FOR, P.G. SEM-II, CC-VI

UNIT-II

PAGE NO :

DATE :

SPANISH CIVIL WAR (स्पेन का गृहयुद्ध)

एक इतिहासकार के लिये स्पेन का गृहयुद्ध घटनाओं की शृंखला की एक महत्वपूर्ण कड़ी मात्र है जिसने की 20वीं सदी के प्रथमार्द्ध, विशेषरूप से दोनो विश्वयुद्ध के बीच की दुनिया को काफी करीब से प्रभावित किया। यह एक विचित्र विडम्बना थी कि काफी दिनों से उपेक्षित स्पेन में अचानक ही यूरोपीय शक्तियों की दिलचस्पी बढ़ गई जिसके परिणामस्वरूप सैनिक विप्लव से आरम्भ होकर गृहयुद्ध का रूप धारण कर लेनेवाला स्पेनी गृहयुद्ध कई मायनों में यह द्वितीय महायुद्ध का 'ड्रेस रिहर्सल' साबित हुआ। स्पेनी गृहयुद्ध को अचानक विश्व की जीती-जागती तस्वीर स्पेनी चित्रकार 'पाब्लो पिकासो' की रचना 'गुयेर्निका' में देखने को मिलती है जो गृहयुद्ध संबंधी हमारे ज्ञान को भावनात्मक स्तर तक ले जाती है।

स्पेन की राजनीतिक अवस्था बहुत दिनों से अस्थिर थी। वहां गणतन्त्रवादियों तथा एकतन्त्रवादियों का निरंतर संघर्ष चल रहा था। इसके साथ ही सैनिक पदाधिकारी भी राजनीति में काफी प्रभाव रखते थे। देश में मध्यम वर्ग संगठित नथा। निम्न वर्ग शक्तिहीन तथा गैर-जागरूक थे। प्रधानतः उच्चवर्ग की दलबंदी से चलता था। पुनः स्पेन में कई प्रांत ऐसे थे जो केन्द्र से पृथक होकर अपना स्वतंत्र अस्तित्व कायम करना चाहते थे,

Scanned with CamScanner

इनमें कैथेलोनिआ प्रांत का नाम उल्लेखनीय है। स्पेनी उपनिवेश मोरक्को में भी अशांति थी तथा वहाँ की मूल जातियां समय-समय पर विद्रोह करती थी। उन्हें दबाना कठिन था।

इसी पृष्ठभूमि में 1931 ई. में स्पेन में म्यूनिसिपल चुनाव हुये। उसमें राजतंत्रवादियों की पराजय हुई और गणतंत्रवादी और समाजवादी निर्वाचित हुये। परिणामतः स्पेन के राजा एल्फांसो 13 वें ने सिंहासन छोड़ा तथा राष्ट्रपति 'सेनाव अल्काला जमोरा' ने अस्थाई सरकार गठित की।

जून 1931 ई में आम चुनाव हुये। इसमें पुनः राजतंत्रवादियों की पराजय हुई और गणतंत्रवादियों की विजय, जिसके परिणामस्वरूप स्पेन में सर्ववर्गीय श्रमिकों की जनतंत्रवादी गणतंत्र की स्थापना हुई। नवीन सरकार को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। अनेक प्रांत में विद्रोह हो रहे थे। राजतंत्रवादी पुनः सत्ता प्राप्त करना चाह रहा था, समाजवादी देश में नई अवस्था लाना चाहते थे। चारों ओर किसानों एवं जमींदारों के झगड़े चल रहे थे। कैथोलिक गणतंत्रवादी सरकार के कट्टर शत्रु थे। देश की आर्थिक अवस्था खराब हो चली थी तथा सरकार का बजट बराबर घाटे में चल रहा था।

इस असंतोषजनक परिस्थिति का लाभ उठाकर जुलाई 1936 ई. में मोरक्को में स्थित

सैन्य दल का कमांडर "जनरल फ्रांसिस्को फ्रैंको" ने स्पेनी उपनिवेश मोरक्को में विद्रोह कर दिया और स्पेन में गणतंत्रवादी सरकार का तख्ता उलटने के लिये उसपर आक्रमण कर दिया। स्पेन की सेना ने फ्रैंको का साथ दिया। इसप्रकार स्पेन में गृहयुद्ध प्रारम्भ हो गया। इस गृहयुद्ध में संसार के अनेक प्रमुख देशों के हित शामिल थे तथा इसका प्रभाव भी व्यापक था फलतः इसे छोटा विश्वयुद्ध (Little world war) कहा गया।

यूरोप के प्रमुख तानाशाह। -हिटलर (जर्मनी) तथा मुसोलिनी (इटली) ने जनरल फ्रैंको का साथ दिया। उसकी सहायता के लिये इन्होंने बहुत बड़ी संख्या में सैनिक, हवाई जहाज, हथियार भेजे।

रूस ने गणतंत्रवादियों का पक्ष लिया किंतु इंग्लैंड फ्रांस और अमेरिका कोई भी स्पेन की घरेलू समस्या में हस्तक्षेप करना उचित नहीं समझा। इससे स्पेन का गणतंत्रवादी दल असहाय हो गया। पश्चिमी देश तथा राष्ट्रसंघ जर्मनी तथा इटली को जनरल फ्रैंको को सैन्य सहायता देने से रोक नहीं पाये, परिणामतः फ्रैंको विजयी होता गया। आपसी एकता, अनुशासन एवं संगठनात्मक कमियों के कारण गणतंत्रवादी दलों का पराजय अपरिहार्य बना। 25. Jan. 1939 को फ्रैंको की सेना ने पूरी तैयारी के साथ बार्सीलोना पहुँची और दूसरे दिन उसपर अधिकार कर लिया। 28-29 मार्च 1939 को फ्रैंको की सेना ने मैड्रिड को भी अपने अधिकार

Scanned with CamScanner

में ले लिया। इस प्रकार लगभग 32 माह तक चले इस युद्ध की समाप्ति हो गई। ऐसा अनुमान है कि युद्ध, हवाई हमलों और बीमारी के कारण लगभग 7 लाख लोग मारे गये, हजारों विस्थापन के शिकार बने तथा सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था तहस-नहस हो गई। 27 Feb. 1939 को इंग्लैंड एवं फ्रांस दोनों ने फ्रैंको की सरकार को मान्यता दे दी तथा 1 अप्रैल 1939 को अमेरिका ने भी स्वीकार कर लिया।

[क्रमशः जारी]

Scanned with CamScanner